राष्ट्रीय सहारा

पटना • सोमवार • 10 जुलाई • 2023

# शिक्षा प्रणाली सुधारने की करनी होगी शुरुआत : राज्यपाल

ुर (एसएनबी)। विश्वविद्यालय में शिक्षा मंथन ्म के दूसरे दिन समापन समारोह में राज्यपाल ्विन पटेल ने कहा कि शिक्षा प्रणाली में सुधार के हमें खुद शुरुआत करनी होगी। एक-दूसरे पर ारी थोपना सही नहीं है। प्रदेश के मंत्रियों से निवेदन ्रह विभागों को बुलाकर प्रेजेंटेशन करायें। समस्या और उसका समाधान क्या होगा, इस पर मंथन जाये। अपने विभागों के अधीन शिक्षण संस्थाओं में से सुधारों को लागू करायें। कोई अधिकारी मना उस पर कार्यवाही करें।

ाज्यपाल ने कहा कि पूर्व में 127 महाविद्यालयों के ुई बैठक और इस शिक्षा मंथन में जो समस्यायें आयी हैं, उन्हें वह मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव और मुख्य सचिव को भेजेंगी और दो माह बाद सबकी ा करेंगी। उन्होंने समापन वक्तव्य में कहा कि ऐसे ्समय में विवि में मंथन कार्यक्रम हो रहा है। इसमें के बेहतर भविष्य की नींव तैयार हो रही है और लाभ उन्हें आने वाले वर्षों में मिलेगा। क्योंकि जो ्हमारा सिलेबस है, वह 5 साल बाद काम नहीं आने ्है। इस शिक्षा मंथन कार्यक्रम से आने वाले वर्षों की बदलेगी। उन्होंने कहा कि वह जब भी अखबार हैं तो ज्यादातर विश्वविद्यालयों में एडमिशन ्रून अंकतालिका में बदलाव व डिग्री न मिलने ्खबरें पढ़ती हैं। गुजरात में भी कई वर्ष पूर्व ऐसा ही ्केन उन्होंने प्रयत्न करके उन हालातों को बदला। ्रह यूपी में भी विश्वविद्यालयों में व्यापक सुधार की ा है। राज्यपाल ने कुलपति प्रोफेसर विनय कुमार से कहा कि शिक्षा मंथन कार्यक्रम में हुए ्करण व आने वाले सुझावों की सॉफ्ट कॉपी सभी ्विद्यालयों को 2 से 3 दिन में भेजें। यह सभी ्विद्यालय अपने यहां कर्मचारियों की बैठक करके ्जेंटेशन व सुझावों को देखें। साथ ही यह देखें कि ्र किन बातों पर अमल करने की जरूरत है। नैक,




विश्वविद्यालय में शिक्षा मंथन कार्यक्रम के समापन पर राज्यपाल के साथ उपस्थित विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति। फोटो : एसएनबी

एनआईआरएफ, क्यूएस वर्ल्ड रैंकिंग आदि में प्रतिभाग करें। **बेस्ट प्रैक्टिस बुक बना विश्वविद्यालयों को भेजें :** राज्यपाल ने विश्वविद्यालयों से भी कहा कि वह अपने यहां संचालित गतिविधियों के आधार पर बेस्ट प्रैक्टिस बुक बनाएं और उन्हें सभी विश्वविद्यालयों को भेजें। उसके अनुरूप सभी विश्वविद्यालय भी अपने यहां उन गतिविधियों को शुरू कराएं। हालांकि चुटकी लेते हुए उन्होंने कहा कि नैक में ए प्लस प्लस ग्रेड लाने वाले दो विश्वविद्यालयों को होमवर्क दिया था, जो अभी तक पूरा नहीं हुआ।

**आंगनबाड़ी केंद्रों में भी शुरू करें एनईपी :** राज्यपाल ने बताया कि राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति केजी से लेकर पीजी तक में भी लागू की गई है। आंगनबाड़ी केंद्रों में भी बच्चों के लिए नई शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षा व्यवस्था का प्रावधान किया गया है, लेकिन आंगनबाड़ी केंद्रों को अभी तक यह नहीं मालूम कि उन्हें क्या करना है और क्या नहीं।

> शिक्षा मंथन 2023 के निष्कर्ष से बदलेगी तस्वीर

**'राष्ट्रीय शिक्षा नीति को सबसे पहले उप्र में किया गया लागू' :** शिक्षा मंथन कार्यक्रम में राज्यपाल के विशेष कार्य अधिकारी डॉ. पंकज एल जानी ने कहा कि राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति को उत्तर प्रदेश सरकार ने पूरे देश में सबसे पहले अपनाया और विश्वविद्यालयों में इसे लागू भी किया।

नतीजा यह है कि अगले साल हम स्नातक का पहला बैच देने जा रहे हैं। फिर भी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में आज भी नई शिक्षा नीति को लेकर तमाम तरह की समस्याएं हैं, जिन्हें दूर किए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि महाविद्यालयों में स्किल कोर्स शुरू हो चुके हैं लेकिन आज भी कई कॉलेजों में स्किल कोर्स पढ़ाने के लिए शिक्षक नहीं हैं। महाविद्यालयों के पास फंड की भी बेहद कमी है, जिसके कारण वह अपने इन्फ्रास्ट्रक्चर व संसाधनों में सुधार कर अपेक्षित बदलाव नहीं कर पा रहे हैं। नई शिक्षा नीति में क्रेडिट ट्रांसफर प्रणाली शुरू की गई है, लेकिन क्रेडिट बैंक के जरिए क्रेडिट ट्रांसफर किए जाने के बारे में विभिन्न तरह की भ्रांतियां हैं।

कोई विश्वविद्यालय 100 अंक के प्रश्न पत्र में 4 क्रेडिट पॉइंट दे रहा है तो कोई 3 क्रेडिट प्वाइंट दे रहा है। नई शिक्षा नीति के अनुसार स्टडी मेटेरियल का भी अभाव है। कोई छात्र चाहता है कि वह अपने दो क्रेडिट पॉइंट लेकर दिल्ली विश्वविद्यालय के किसी कोर्स में प्रवेश ले ले, लेकिन पूरी जानकारी न होने से वह ऐसा नहीं कर पाता। विज्ञान के तमाम महाविद्यालयों में लैब भी नहीं है। इसके कारण रिसर्च वर्क नहीं हो पा रहा है। तकनीकी का उपयोग करने में भी महाविद्यालय काफी पीछे हैं।

# स्वयं पोर्टल विद्यार्थियों की बढ़ा रहा स्किल

– अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के चेयरमैन डॉक्टर सीताराम ने दी जानकारी

( रहस्य संदेश )

कानपुर रू शिक्षा मंथन कार्यक्रम के छठे सत्र में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के चेयरमैन डॉक्टर टीजी सीता राम ने उच्च और तकनीकी शिक्षा में स्किल डेवलपमेंट, इन्क्यूबेशन व प्लेसमेंट विषय पर व्याख्यान दिया। सत्र की अध्यक्षता मदन मोहन मालवीय विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो जेपी पांडेय ने की।

डॉ सीताराम ने भारतवर्ष में स्किल डेवलपमेंट इकोसिस्टम की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मिनिस्ट्री ऑफ स्किल डेवलपमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप के अंतर्गत रोजगार एवं प्रशिक्षण निदेशालय, नेशनल काउंसिल फॉर वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग, नेशनल स्किल डेवलपमेंट कारपोरेशन कार्य कर रहे हैं। जिनके माध्यम से छात्र छात्राओं के साथ ही शिक्षकों को भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। डॉ सीताराम ने स्वयं पोर्टल के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि स्वयं (स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव–लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स) भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक कार्यक्रम है और इसे शिक्षा नीति के तीन प्रमुख सिद्धांतों, पहुंच, समानता और गुणवत्ता को प्राप्त करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह प्लेटफॉर्म दुनिया का सबसे बड़ा ऑनलाइन मुफ्त ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म पोर्टल है, जिसे स्कूलध वोकेशनल, अंडर–ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट, इंजीनियरिंग और अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को कवर करके शिक्षा नीति के तीन प्रमुख सिद्धांतों, पहुंच, समानता और गुणवत्ता को प्राप्त करने के लिए डिजाइन किया गया है। करीब एक करोड़ से ज्यादा छात्र इंडस्ट्री ओरिएंटेड कोर्स में प्रतिभाग कर रहे हैं। गुवाहाटी, जयपुर, भोपाल व चंडीगढ़ में फिजिकल ट्रेनिंग सेंटर भी जल्द शुरू कराए जा रहे हैं। विद्यार्थियों के लिए तमाम नए वोकेशनल कोर्स भी डिजाइन किए गए हैं। समर्थ प्रणाली को भी अपनाने के लिए शैक्षिक संस्थानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

एआईसीटीई की आईडिया लैब 24 घंटे कर रही काम

स्टार्टअप इकोसिस्टम पर बात करते हुए प्रोफेसर सीताराम ने बताया कि अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद की आइडिया लैब 24 घंटे सातों दिन काम कर रही है। यहां एक ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाता है जहां प्रतिभागी अपने विचारों को नवाचारों में परिवर्तित करते हैं। आइडिया लैब सबसे लंबे समय तक चलने वाला प्रौद्योगिकी इनक्यूबेटर है और अब तक सैकड़ों कंपनियां यहां से निकलकर सफलतापूर्वक व्यवसाय कर रही हैं। उन्होंने बताया कि एआईसीटीई की ओर से नेशनल इन्नोवेशन एंड स्टार्टअप पॉलिसी 2019 की शुरुआत भी की गई थी जो मील का पत्थर साबित हो रही है। तकनीकी महाविद्यालयों के छात्र छात्राएं युक्ति 2.0 के माध्यम से अपने नवाचारों को मूर्त रूप दे रहे हैं। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा समन्वय पर भी जोड़ दिया और कहा कि विदेश के शैक्षिक संस्थानों से एमओयू के लिए पॉलिसी की जरूरत है। वर्तमान में तकनीकी शिक्षा संस्थानों को एमओयू के लिए राज्य सरकार के अनुमति जरूरी है, जिसमें काफी समय लग जाता है। इसमें सुधार की आवश्यकता है। उन्होंने ए ग्रेड वाले विश्वविद्यालयों से खुद का ऑनलाइन प्रोग्राम भी शुरू करने का आह्वान किया।

Campus
amarujala.com/kanpur
my city
कानपुर | सोमवार
अमर उ

# कोर ब्रांच के छात्रों को देश-विदेश में नौकरी दिलाएगा एआईसीटीई

## अगले महीने शुरू होगा प्लेसमेंट पोर्टल, 1800 कंपनियां जुड़ेंगी

**कोर इंजीनियरिंग ब्रांच की ओर रुझान कम हुआ लेकिन डाटा साइंस, एआई की ओर बढ़ा भी है**

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। छोटे शहरों के इंजीनियरिंग कॉलेजों के कोर ब्रांच के छात्र अब देश-विदेश में नौकरी करने के सपने को पूरा कर सकेंगे। ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन (एआईसीटीई) ने ऐसे छात्रों के लिए प्लेसमेंट पोर्टल बनाया है। पोर्टल की शुरुआत अगस्त में होगी। यह जानकारी एआईसीटीई के चेयरमैन प्रो. टीजी सीताराम ने दी।

एआईसीटीई के चेयरमैन प्रो. टीजी सीताराम। भास्कर

उन्होंने कहा कि इस पोर्टल में देश और विदेश की 1800 कंपनियां जुड़ी हैं। साथ ही इस साल देश में 200 नए इंजीनियरिंग कॉलेज खुल रहे हैं। हालांकि कई इंजीनियरिंग कॉलेजों में ताला बंद करने की भी तैयारी है। उन्होंने माना है कि कोर इंजीनियरिंग ब्रांच की ओर छात्रों का रुझान कम जरूर हुआ है, लेकिन डाटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, मशीन लर्निंग की ओर बढ़ा भी है।

प्रो. सीताराम ने प्रेसवार्ता के दौरान बताया कि देश में 3600 इंजीनियरिंग कॉलेज और 500 डिप्लोमा कॉलेज हैं। पहले चरण में प्लेसमेंट पोर्टल से करीब 1000 कॉलेजों को जोड़ा जाएगा। कोर इंजीनियरिंग ब्रांच के शिक्षकों को नई ब्रांच की ट्रेनिंग भी दी जाएगी। इसके लिए छह महीने के क्वालिटी इंप्रूवमेंट प्रोग्राम की शुरुआत की जाएगी। इसकी मदद से कोर ब्रांच के शिक्षकों को आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, मशीन लर्निंग, डेटा साइंस आदि का जानकार बनाया जा सकेगा। शिक्षक आईआईटी, एनआईटी जैसे संस्थानों में जाकर ट्रेनिंग ले सकेंगे। सभी छात्रों के लिए इंटर्नशिप अनिवार्य कर दी गई है।

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) भविष्य नहीं वर्तमान है। इसलिए, एआई का उपयोग बढ़ाना ठीक है। इसके लिए एक कमेटी भी बनाई है, जो एआई के प्रचार-प्रसार को लेकर रिपोर्ट देगी। इंजीनियरिंग कॉलेज को संबद्धता और सीटों के एलॉटमेंट को लेकर उन्होंने कहा कि मानक के अनुसार निर्धारित समय पर सूची जारी की जाती है।

**इंजीनियरिंग कॉलेजों को फ्री देंगे अनुवादिनी:** प्रो. सीताराम बताया कि इंजीनियरिंग की पढ़ाई मातृभाषा में कराने के लिए एआईसीटीई के वैज्ञानिक प्रो. बुद्धा चंद्रशेखर ने अनुवादिनी टूल विकसित किया है। जल्द इस अनुवादिनी को काउंसिल से संबद्ध सभी इंजीनियरिंग कॉलेजों को निशुल्क दिया जाएगा। ताकि वे मातृभाषा में स्टडी मैटीरियल का अनुवाद कर सकें। इसे पब्लिक डोमेन में भी लागू करने की तैयारी है। प्रो. सीताराम ने बताया कि अनुवादिनी टूल 13 सेकेंड में 500 पेज का अनुवाद कर सकता है। यह 22 भाषाओं में काम करता है।

छत्रपति शाहूजी महाराज विवि में शिक्षा मंथन कार्यक्रम के समापन पर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित करते कुलपति प्रो. विनय पाठक, प्रो. शमशेर, प्रो. संगीता शुक्ला, प्रो. आलोक कुमार राय व अन्य। भास्कर

### स्वयं पोर्टल विद्यार्थियों की बढ़ा रहा है स्किल

शिक्षा मंथन कार्यक्रम के छठे सत्र में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के चेयरमैन डॉक्टर टीजी सीताराम भारतवर्ष में स्किल डेवलपमेंट इकोसिस्टम की विस्तृत जानकारी दी। सत्र की अध्यक्षता मदन मोहन मालवीय विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. जेपी पांडेय ने की। डॉ. सीताराम ने बताया कि स्वयं पोर्टल (स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव-लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स) दुनिया का सबसे बड़ा ऑनलाइन मुफ्त ई-लर्निंग प्लेटफार्म पोर्टल है। करीब एक करोड़ से ज्यादा छात्र इंडस्ट्री ओरिएंटेड कोर्स में प्रतिभाग कर रहे हैं। गुवाहाटी, जयपुर, भोपाल व चंडीगढ़ में फिजिकल ट्रेनिंग सेंटर भी जल्द शुरू कराए जा रहे हैं। प्रो. सीताराम ने बताया कि अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद की आइडिया लैब 24 घंटे सातों दिन काम कर रही है। यहां एक ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाता है जहां प्रतिभागी अपने विचारों को नवाचारों में परिवर्तित करते हैं। कहा कि वर्तमान में तकनीकी शिक्षा संस्थानों को एमओयू के लिए राज्य सरकार के अनुमति जरूरी है, जिसमें काफी समय लग जाता है। इसमें सुधार की आवश्यकता है। उन्होंने ए ग्रेड वाले विश्वविद्यालयों से खुद का ऑनलाइन प्रोग्राम भी शुरू करने का आह्वान किया।

### मेडिकल कॉलेजों को एनआईआरएफ में आवेदन करना ही नहीं आता : बृजेश पाठक

कानपुर। केजीएमयू और एसजीपीजीआई के साथ जल्द ही अन्य मेडिकल कॉलेज भी एनआईआरएफ (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रैंकिंग फ्रेमवर्क) की सूची में शामिल होंगे। दरअसल, इन मेडिकल कॉलेजों को अभी एनआईआरएफ में आवेदन करना नहीं आता है। कानपुर विश्वविद्यालय में आयोजित शिक्षा मंथन से ऐसे को कॉलेजों को लाभ मिलेगा। ये बात उपमुख्यमंत्री और चिकित्सा शिक्षा मंत्री बृजेश पाठक ने कही।

शनिवार को उद्घाटन सत्र में आए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के सभी 75 जिलों में मेडिकल कॉलेज बनेंगे। अभी प्रदेश के 14 जिलों में मेडिकल कॉलेज नहीं है। इसमें से दो जिलों में पीपीपी मॉडल के तहत एमओयू हो चुका है। छह जिलों में पीपीपी और छह जिलों में केंद्र सरकार की मदद से मेडिकल कॉलेज बनाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि सीएचसी, पीएचसी को आधुनिक रूप से मजबूत करने की तैयारी है। जेके कैंसर अस्पताल में बजट की कमी समेत अन्य खामियों का दंश झेल रहे मरीजों को लेकर उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने कहा कि जल्द खामियां दूर की जाएंगी। बृजेश पाठक ने कहा कि अस्पतालों में दिक्कत न हो, इसके लिए जिलाधिकारी व मुख्य चिकित्सा अधिकारी को स्थानीय स्तर पर खाली पदों पर भर्ती करने का अधिकार दिया गया है। (व्यूरो)

### स्किल कोर्स में हैं शिक्षकों की कमी

राज्यपाल के ओएसडी डॉ. पंकज एल जानी ने कहा कि स्किल कोर्स तो शुरू कर दिए गए हैं, लेकिन शिक्षकों, फंड, संसाधनों की कमी है। एनईपी के तहत पठन सामग्री का भी अभाव है। प्रदेश में सबसे पहले नई शिक्षा नीति लागू हुई और इस साल स्नातक का पहला बैच पास होगा। लेकिन अभी भी दिक्कतें खत्म नहीं हुई हैं। पद्मश्री डॉ. छामू कृष्ण शास्त्री ने कहा कि यूजीसी ने छात्रों को मनचाही भाषा में पढ़ाई करने का मौका दिया है। शिक्षकों को हिंदी भाषा में स्टडी मैटीरियल तैयार करने के लिए सूची बनानी चाहिए। वे कुछ किताबों का अनुवाद करें तो कुछ विषय की पुस्तकें खुद तैयार करें। इसी दौरान दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि अब समय आ गया है कि महाविद्यालयों को ऑटोनॉमस बनाया जाए। (व्यूरो)

# मोबाइल के अधिक इस्तेमाल से दो घंटे कम सो रहे बच्चे

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। पांच साल से कम उम्र के बच्चों को मोबाइल बिल्कुल न दें। लगातार मोबाइल के इस्तेमाल से न केवल बच्चों की औसत नींद में कमी आई है, उनका आईक्यू लेवल भी गिरा है। एक साल का बच्चा जहां 16 घंटे की नींद लेता था, अब वह औसतन 14 घंटे ही सो रहा है। दरअसल, बच्चे रोते हैं तो मां-बाप उन्हें मोबाइल पकड़ा देते हैं। इससे उनकी नींद में खलल पड़ा है। यह जानकारी सीएसजेएमयू में चल रहे शिक्षक मंथन में ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज जोधपुर के अध्यक्ष डॉ. कुलदीप सिंह ने दी।

### बच्चों में चिड़चिड़ापन बढ़े तो किडनी की जांच करवाएं

डॉ. कुलदीप ने बताया कि मोबाइल देखकर खाना खाने या दूध पीने वाले बच्चों की सेहत और खराब हो रही है। बच्चों की किडनी प्रभावित हो रही है। भले ही बच्चे देखने में कमजोर न लगें, यदि उनका चिड़चिड़ापन बढ़े तो किडनी की जांच भी करवा लें।

उन्होंने कहा कि मोबाइल से बच्चों को दूर रखने में अभिभावक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। मोबाइल के साथ स्मार्ट टीवी भी बच्चों को उतना ही नुकसान पहुंचा रहे हैं। मोबाइल की वजह से बच्चों का आईक्यू 110 की जगह यह अब 80-90 ही रह गया है।

# कुलपतियों को दी काम के प्रति गंभीर रहने की सीख

माई सिटी रिपोर्टर

**राज्यपाल बोलीं, दो विवि के कुलपतियों ने नहीं पूरा किया मेरा दिया होमवर्क**

कानपुर। कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल ने जब मंच से कुलपतियों को संबोधित किया तो सभागार में सन्नाटा छा गया। चेहरे पर मुस्कान लिए उन्होंने जब कुलपतियों को काम के प्रति गंभीर रहने को कहा तो सभी मौन हो गए। बोलीं, नैक में ग्रेड पाए दो विवि के कुलपतियों को काफी समय पहले मैंने होमवर्क दिया था, वह अभी तक पूरा नहीं हुआ है। होमवर्क उनको याद नहीं होगा, लेकिन मुझे सब याद है। अब याद आ जाए तो करके दे देना।

सीएसजेएमयू के शिक्षा मंथन के समापन सत्र में राज्यपाल ने कहा कि दो दिन के कार्यक्रम से पहले आयोजकों ने कहा कि आप पूरे दिन बैठें, तभी सभी शामिल रहेंगे। यह ठीक नहीं है। काम के प्रति गंभीरता बेहद जरूरी है। काम को टालने की आदत छोड़ दें। अक्सर लोग कहते हैं कि मैंने सीएम कार्यालय में फाइल भेज दी है। सीएम से पूछती हूं तो वह मना करते हैं कि मेरे पास तो ऐसी कोई शिकायत आई ही नहीं। सही समय पर सही निर्णय लें, बच्चों को परेशान नहीं होना चाहिए।

डेढ़ महीने में 127 कॉलेजों की समस्याओं को सुना है, जिसका निस्तारण अभी तक नहीं हुआ है। सभी बीसों समस्याओं की रिपोर्ट तैयार कर अधिकारियों को भेजें। तीन महीने के भीतर सभी समस्याओं का समाधान हो जाना चाहिए।

एनईपी कंजी से लेकर पीजी तक लागू है, लेकिन आंगनबाड़ी के बच्चों को इसकी जानकारी है ही नहीं। उनको जानकारी कौन देगा, यह सब राजभवन के काम नहीं है। प्रधानमंत्री ने मुझे इसकी जिम्मेदारी सौंपी है तो मैं कर रही हूं।

**मंत्री अधिकारी विभाग का दौरा करें :** मंत्री अधिकारी भी अपने विभाग की समस्याओं को जाने और दौरा करें। जो समस्याएं हैं तत्काल प्रभाव से निस्तारण हों। उन्होंने कहा कि अगस्त में

### शिक्षा मंथन हर महीने करें

राज्यपाल ने कहा कि हर महीने शिक्षा मंथन का कार्यक्रम अपने अपने विवि में करें। इस मंथन के निचोड़ की रिपोर्ट तैयार कर तीन दिन के भीतर सभी विवि को सौंप दें। सभी विवि इस रिपोर्ट को अपने संस्थान के अधिकारी, शिक्षक, कर्मचारियों के साथ साझा करें। विवि को आगे बढ़ाने में सभी का योगदान चाहिए।

### शिक्षा मंथन की रिपोर्ट तैयार कर सभी को भेजें

विवि में चल रहे दो दिवसीय शिक्षा मंथन का रविवार को समापन हुआ। राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव डॉ. सुधीर एम बोबडे ने कहा कि मंथन की एक पूरी रिपोर्ट तैयार की जाएगी। इसके आधार पर शिक्षा की नीति को लागू करने में मदद मिलेगी। शिक्षा मंथन के समापन पर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने सीएसजेएमयू कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक और उनकी टीम को बधाई दी। कुलपति ने कहा कि कार्यक्रम का आयोजन विवि के छात्रों से कराया है। जर्नलिज्म विभाग के बच्चों ने कवरेज का जिम्मा उठाया तो होटल मैनेजमेंट के बच्चों ने हॉस्पिटेलिटी का जिम्मा दिया था। कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रति कुलपति प्रो. सुधीर अवस्थी, प्रो सुधांशु पांडिया प्रो. संदीप सिंह, डॉ. प्रवीण कटियार, डॉ. प्रवीण भाई पटेल, डॉ. संदेश गुप्ता, डॉ. विवेक सचान, डॉ. विशाल शर्मा मौजूद रहे।

एडमिशन पूरे होकर पढ़ाई होनी है तो तब विज्ञापन देकर पोस्ट निकाली जाती है। अपनों को लाभ देने के लिए जहां नीति नियम से भटकते हैं तो लोग कोर्ट चले जाते हैं। नीति नियम से काम करें तो कोई कोर्ट नहीं जा पाएगा।

आज़
महानगर
09/07/2023

# समस्याओं को टालें नहीं, निर्णय लेकर आगे बढ़ें कुलपति

## ❑ राज्यपाल ने दो कुलपतियों को दिया था बेस्ट प्रैक्टिस की बुक बनाने का होमवर्क, जो अब तक पूरा नहीं हुआ

रिक्रूमेंट में पादर्शिता की जरूरत, अपने-अपने विश्वविद्यालयों में मंथन करें सभी कुलपति

कानपुर, 9 जुलाई। छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय के रानी लक्ष्मी बाई प्रेक्षागृह में चल रहे शिक्षक मंथन के समापन के अवसर पर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने विश्वविद्यालय व महाविद्यालयों में छात्रों से जुड़ी समस्याओं को लेकर काफी सख्त दिखीं। राज्यपाल ने कहाकि डेढ महीने पूर्व में 127 कॉलेजों की समीक्षा में निकली समस्याएं और शिक्षा मंथन में आई दिक्कतों को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, अपर मुख्य सचिव समेत संबंधित विभागों के प्रमुख सचिव को भेजेंगे। दो माह बाद फिर से समीक्षा की जाएगी। उन्होंने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए समस्याओं को टालने के बजाए समाधान के लिए कुलपतियों को निर्णय लेना चाहिये। चेतावनी देते हुए राज्यपाल ने कहाकि दो कुलपतियों को बेस्ट प्रैक्टिस की बुक बनाने का होमवर्क दिया था, जो अब तक पूरा नहीं हुआ है। राज्यपाल कई सेशन के दौरान प्रेक्षागृह में पीछे की ओर एक दर्शक के रूप में बैठीं और विशेषज्ञों के व्याख्यान सुनें।

अपने भाषण के दौरान राज्यपाल ने कहाकि तीन नये विश्वविद्यालयों में अगस्त महीने से एडमीशन शुरू हो जाएंगे। इसके बाद शिक्षकों की नियुक्ति की प्रक्रिया शुरू होगी जिसमें तीन-चार महीने बीत जाएगा। फिर कोर्ट में मामला जाने पर सभी ठंडे पड़ जाएंगे। गुजरात की वाक्या सुनाते हुए बताया कि वर्षों पहले वहां भी ऐसा था। रिक्रूमेंट में पादर्शिता होने पर कोई उंगली नहीं उठीं। उन्होंने कहाकि शिक्षा मंथन के बाद सभी कुलपति अपने-अपने विश्वविद्यालयों में बैठक करेंगे और नैक, एनआईआरएफ के बार में जानकारियां देंगे। एचबीटीयू में हुए आंगनबाड़ी कार्यक्रम की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि 8 से 11 साल की बच्चियां एक-दूसरे को कंधे पर उठाकर डांस कर रही थी। अच्छा लगा कि इन बच्चों का भविष्य संवारने का काम शिक्षा मंथन में हो रहा है। क्योंकि पांच साल बाद अभी का सिलेबस बेकार होगा। इसलिए अभी से बदलाव जरूरी है। वहीं विभिन्न सेशन के बाद राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव डॉ. सुधीर एम बोबडे ने कहा कि शिक्षक मंथन की एक पूरी रिपोर्ट तैयार की जाएगी। जिसे अगले दो से तीन दिनों के अंदर समस्त विश्वविद्यालयों के विवि के कुलपति को भेज दी जाएगी। इसी रिपोर्ट के आधार पर विवि सुधार करें और राजभवन जरूरी बदलाव के निर्देश जारी करेगा। इस दौरान उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक, प्राविधिक शिक्षा मंत्री आशीष पटेल, उच्च शिक्षा राज्यमंत्री रजनी तिवारी समेत कृषि, चिकित्सा, उच्च शिक्षा के प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे।

कार्यक्रम में शामिल राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल, डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक व अन्य।

### अखबार में सिर्फ परीक्षा, मूल्यांकन व रिजल्ट से जुड़ी खबरें

कानपुर। राज्यपाल ने कहा कि रोजाना प्रदेश के अखबारों में छपी खबरों को पढ़ती हूं। उसमें सिर्फ परीक्षा, मूल्यांकन व रिजल्ट से जुड़ी खबरें विवि की आती हैं। जिसे पढ़कर दुख होता है। सभी विवि प्राथमिकता पर छात्रों की समस्याएं हल करें। गुजरात की तरह यूपी में भी विवि में व्यापक सुधार की जरूरत है।

### राज्यपाल ने दी सीएसजेएमयू को बधाई

कानपुर। शिक्षा मंथन के समापन पर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने सीएसजेएमयू कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक, रजिस्ट्रार डॉ. अनिल कुमार यादव समेत पूरी टीम को बधाई दी। उन्होंने हंसते हुए कहा कि खाना अच्छा रहा, पीना नहीं। उन्होंने सभी कुलपतियों व अधिकारियों से कहा कि रहना, खाना व अन्य सुविधा ठीक लगी हो तो विनय पाठक को बधाई दें और खराब लगा हो तो राजभवन को बताएं। कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रति कुलपति प्रो. सुधीर अवस्थी, प्रो. सुधांशु पाण्डिया प्रो. संदीप सिंह, डॉ. प्रवीण कटियार, डॉ. प्रवीण भाई पटेल, डॉ. संदेश गुप्ता, डॉ. विवेक सचान, डॉ. विशाल शर्मा मौजूद रहे।

# 'बेहतर बनने के लिए हमें आधुनिक युग की तरफ जाना होगा'

## नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में आ रही कई समस्याएं

शिक्षा मंथन कार्यक्रम में राज्यपाल के विशेष कार्य अधिकारी डॉ. पंकज एल जानी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में आ रही समस्याओं के बारे में बात करते हुए कहा कि महाविद्यालयों में स्किल कोर्सो की शुरुआत हो चुकी है लेकिन आज भी कई कॉलेजों में स्किल कोर्स पढ़ाने के लिए शिक्षक नहीं है। उन्होंने कहा कि महाविद्यालयों के पास फंड की भी कमी है जिसके कारण वह अपने इंफास्ट्रक्चर व संसाधनों में सुधार कर अपेक्षित बदलाव नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति के अनुसार स्टडी मेटेरियल का भी अभाव है। कोई छात्र चाहता है कि वह अपने दो क्रेडिट पॉइंट लेकर दिल्ली विश्वविद्यालय के किसी कोर्स में प्रवेश ले। लेकिन प्रॉपर जानकारी न होने से वह ऐसा नहीं कर पाता है। विज्ञान के तमाम महाविद्यालयों मैं लैब भी नहीं है जिसके कारण रिसर्च वर्क नहीं हो पा रहा है। उन्होंने कहा कि तकनीकी का उपयोग करने में भी महाविद्यालय काफी पीछे हैं।

**जन एक्सप्रेस। प्रदीप शर्मा**

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय में चल रहे शिक्षा मंथन कार्यक्रम के दूसरे दिन रविवार को दिल्ली विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर योगेश सिंह ने कहा कि सेमेस्टर परीक्षाओं के होने से शिक्षा में काफी बदलाव आया है। बेहतर बनने के लिए हमें आधुनिक युग की तरफ जाना है।

उन्होंने कहा कि रिसोर्सेस का प्रयोग कब कहां करना है इसका चयन करना जरूरी है क्योंकि इसका फायदा बच्चों को मिलना चाहिए तभी वह आगे बढ़ पाएंगे। उन्होंने नई शिक्षा नीति में क्रेडिट ट्रांसफर पॉलिसी के बारे में जानकारी दी। उन्होंने विश्वविद्यालयों के कुलपतियों से अपने यहां लीडरशिप विकसित करने की बात कही जिससे छात्र छात्राएं आगे चलकर देश का नेतृत्व करने में सक्षम हो। उन्होंने कहा कि नेशनल एजुकेशन पॉलिसी से लोगों को बहुत उम्मीदें हैं हमें अपनी क्वालिटी मेन पावर को मजबूत बनाना है। शिक्षकों को भी नई तरह से बदलना है बच्चों की विधा को इंप्रूव करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हमें बच्चों को टीमवर्क के फायदे बताने के साथ ही अच्छाई को प्रमोट करना होगा।

हिंदुस्तान कानपुर 10/07/2023

# शिक्षा मथन

# सावधान ! आपके बच्चों की नींद छीन रहा मोबाइल

- एम्स जोधपुर के पीडियाट्रिक्स विभाग के हेड डॉ. कुलदीप के सर्वे में मिले चौंकाने वाले आंकड़े
- मासूमों में हो रहा केमिकल डिसबैलेंस, एंजाइटी और चिड़चिड़ेपन का शिकार होते जा रहे

डॉ. कुलदीप।

**18** घंटे सोने वाले एक साल के बच्चे अब 16 घंटे की नींद ले रहे

**08** घंटे की नींद लेने वाले 12 साल के बच्चे सिर्फ छह घंटे ही सो रहे

कानपुर, प्रमुख संवाददाता। दिन पर दिन मोबाइल से बच्चों का लगाव बढ़ता ही जा रहा है। भोजन करना हो या फिर शांति से बैठना हो, इसके लिए भी उन्हें मोबाइल चाहिए। अब इस मोबाइल ने बच्चों की दो घंटे की नींद कम कर दी है। एक साल की उम्र वाले बच्चे पहले औसतन 16 घंटे तक सोते थे, अब उनकी नींद 14 घंटे ही रह गई। वहीं, 12 साल से अधिक उम्र वालों की नींद 8 से घटकर 6 घंटे रह गई है। यह बात एम्स जोधपुर के पीडियाट्रिक्स विभाग के हेड डॉ. कुलदीप सिंह ने कही। कहा कि मोबाइल को लेकर बच्चों पर एक सर्वे कराया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, पांच साल तक की उम्र के बच्चों के लिए पूरी तरह मोबाइल प्रतिबंधित रखना चाहिए। वैसे सामान्य व्यक्ति को भी अधिकतम चार घंटे ही मोबाइल प्रयोग करना चाहिए।

सीएसजेएमयू में आयोजित शिक्षा मंथन में शिरकत करने आए डॉ. कुलदीप सिंह ने कहा कि बच्चों की नींद प्रभावित होने से उनके व्यवहार में भी परिवर्तन आ रहा है। उनके दिमाग में केमिकल डिसबैलेंस हो रहे हैं। इससे वे चिड़चिड़े हो रहे हैं और उनमें एंजाइटी की समस्या आ रही है। डॉ. सिंह ने कहा कि बच्चों में डेवलपमेंट एक्टिविटी का सर्वे हुआ, जिसमें मोबाइल का इस्तेमाल करने वाले बच्चों में आईक्यू 80 मिला जबकि सामान्य बच्चों में 110 से 120 आईक्यू रहा। मोबाइल की तरह स्मार्ट टीवी भी नुकसान पहुंचा रही है। बच्चों में किडनी की समस्या भी बढ़ रही है। कई बार सूजन न आने पर भी किडनी डिजीज बढ़ रही है।

**मोबाइल देखने से बढ़ रहा मोटापा व ब्लडप्रेशर : डॉ. कुलदीप**

सिंह ने कहा कि मोबाइल देखने से बच्चों में मोटापा और ब्लडप्रेशर की समस्या बढ़ रही है। मोबाइल देखते भोजन करने से ओवर-इटिंग की समस्या बढ़ रही है। वहीं एक साल की उम्र वाले बच्चों में भी ब्लडप्रेशर की समस्या बढ़ने लगी है। इसलिए बच्चों में भी बीपी की जांच होनी चाहिए। ब्लडप्रेशर सामान्य रूप से नवजात बच्चों में 40-60, एक साल की उम्र वालों में 60-90, पांच साल की उम्र वालों में 60-100 और 16 साल से अधिक उम्र वालों में 80-120 होना चाहिए।

## महाविद्यालयों को बनाएं ऑटोनामस: डीयू कुलपति

शिक्षा मंथन के दूसरे दिन हुए विभिन्न सेशन में आए शिक्षाविद ने विश्वविद्यालय व प्रदेश को कामयाबी का मंत्र बताया। दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालयों का बोझ कम करने की आवश्यकता है। महाविद्यालयों को ऑटोनामस बनाए। उन्होंने नई शिक्षा नीति में क्रेडिट ट्रांसफर पॉलिसी के बारे में बताया। विवि के कुलपति छात्रों में लीडरशिप विकसित करें। फंड के लिए विवि को सेक्शन-8 कंपनी बनानी चाहिए। एम्स जोधपुर के डॉ. कुलदीप सिंह ने चिकित्सा शिक्षा में भी नैक व एनआईआरएफ के महत्व बताया। अलग-अलग सेशन में प्रो. आलोक कुमार राय, डॉ. विजेंद्र सिंह, प्रो. जेपी पांडेय, डॉ. केके सिंह ने जानकारी दी।

## स्किल कोर्स में शिक्षक कम

राज्यपाल के ओएसडी डॉ. पंकज एल जानी ने कहा कि स्किल कोर्स में शिक्षकों की कमी है। कॉलेजों में स्किल कोर्स तो शुरू हो गए लेकिन पढ़ाने वाले शिक्षक नहीं है। फंड की भी कमी है, जिससे इंफ्रास्ट्रक्चर व संसाधनों में सुधार कर अपेक्षित बदलाव भी संभव नहीं हो रहा है। एनईपी के तहत रटडी मेटेरियल का भी अभाव है। प्रदेश में सबसे पहले नई शिक्षा नीति लागू हुई और इस साल स्नातक का पहला बैच पास होगा। अभी भी दिक्कतें खत्म नहीं हुई है। पद्मश्री डॉ. छामू कृष्ण शास्त्री ने कहा कि यूजीसी ने छात्रों को मनचाही भाषा में पढ़ाई करने का मौका दिया है। शिक्षकों को हिन्दी भाषा में रटडी मटेरियल तैयार करने के लिए सूची बनानी चाहिए। वे कुछ किताबों का अनुवाद करें तो कुछ विषय की पुस्तकें खुद तैयार करें।

### विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों की समस्याओं को लेकर तल्ख दिखीं आनंदीबेन

# सीएम को भेजेंगे मंथन की समस्याएं दो माह बाद करेंगे समीक्षा: राज्यपाल

**सख्ती**

कानपुर, प्रमुख संवाददाता। राज्यपाल व कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल रविवार को शिक्षा मंथन के समापन पर विश्वविद्यालय व महाविद्यालयों की समस्याओं को लेकर सख्त दिखीं। कहा, पूर्व में 127 कॉलेजों की समीक्षा में निकलीं समस्याएं और शिक्षा मंथन में आई दिक्कतों को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, अपर मुख्य सचिव समेत संबंधित विभागों के प्रमुख सचिव को भेजेंगे। दो माह बाद समीक्षा की जाएगी। समाधान नहीं हुआ तो सख्त रवैया अपनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए समस्याओं को टालने के बजाए समाधान निकालना होगा। चेतावनी देते हुए कहा कि दो कुलपति को बेस्ट प्रैक्टिस की बुक बनाने का होमवर्क दिया था, जो पूरा नहीं हुआ है। राज्यपाल ने कई सेशन प्रेक्षागृह में पीछे दर्शक के रूप में बैठकर सुने।

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय (सीएसजेएमयू) के रानी लक्ष्मीबाई प्रेक्षागृह में चल रहे दो दिवसीय शिक्षा मंथन का रविवार को समापन हुआ। विभिन्न सेशन के बाद राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव डॉ. सुधीर एम बोबडे ने कहा कि मंथन की पूरी रिपोर्ट तैयार की जाएगी। जिसे अगले दो से तीन दिन में सभी विवि के कुलपति को भेज दी जाएगी। इसी के आधार पर विवि सुधार करें और राजभवन जरूरी बदलाव के निर्देश जारी करेगा। राज्यपाल ने एचबीटीयू में हुए आंगनबाड़ी कार्यक्रम की प्रशंसा की। कहा, 8 से 11 साल की बच्चियां एक दूसरे को कंधे पर उठाकर डांस कर रही थी। अच्छा लगा कि इन बच्चों का भविष्य संवारने का काम शिक्षा मंथन में हो रहा है। क्योंकि पांच साल बाद अभी का सिलेबस बेकार होगा। बदलाव जरूरी है। उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक, प्राविधिक शिक्षा मंत्री आशीष पटेल, उच्चशिक्षा राज्यमंत्री रजनी तिवारी समेत कृषि, चिकित्सा, उच्चशिक्षा के प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे।

**अखबार में सिर्फ परीक्षा, मूल्यांकन व रिजल्ट से जुड़ी खराब खबरें मिलती हैं... : आनंदीबेन ने कहा**

कि रोजाना पूरे प्रदेश के अखबारों में छपी खबरों को पढ़ती हूं। उसमें सिर्फ परीक्षा, मूल्यांकन व रिजल्ट से जुड़ी खराब खबरें विवि की आती हैं। जिसे पढ़कर दुख होता है। सभी विवि प्राथमिकता पर छात्रों की समस्याएं हल करें। गुजरात की तरह यूपी में भी विवि में व्यापक सुधार की जरूरत है।

सीएसजेएमयू में शिक्षा मंथन में राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक और प्राविधिक शिक्षा मंत्री आशीष पटेल।

## राज्यपाल ने दी सीएसजेएमयू को बधाई

शिक्षा मंथन के समापन पर राज्यपाल ने सीएसजेएमयू कुलपति प्रो. विनय पाठक, रजिस्ट्रार डॉ. अनिल यादव समेत पूरी टीम को बधाई दी। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि खाना अच्छा रहा, पीना नहीं। उन्होंने सभी कुलपतियों व अधिकारियों से कहा कि रहना, खाना व अन्य सुविधा ठीक लगी हो तो विनय पाठक को बधाई दें और खराब लगा हो तो राजभवन को बताएं।

## ये दिए सुझाव

- सभी विवि वेस्ट प्रैक्टिस बुक बनाएं और अन्य सभी विवि को भेजें।
- आंगनबाड़ी केंद्रों में भी नई शिक्षा नीति लागू करने की जरूरत। केंद्रों को नीति का ही पता नहीं है।
- उच्च शिक्षा की समस्या को यूजीसी को भेजें और तीन माह के अंदर निस्तारण कराएं
- समर्थ पोर्टल लागू करने को यूपी तैयार है। भारत सरकार के साथ वार्ता होगी।

## ये बताईं परेशानियां

- एआईसीटीई निर्धारित सेशन के समय कॉलेजों की संबद्धता व सीट निर्धारण नहीं करता है।
- गेस्ट फैकल्टी के लिए वित्त विभाग से निर्धारित समय पर अनुमति नहीं मिलती।
- स्किल कोर्स में शिक्षकों की सख्या कम है।
- अंकतालिका में गड़बडी को लेकर एजेंसी के बजाए सरकारी सॉफ्टवेयर बनना चाहिए।

# एनआईआरएफ में शामिल होंगे अन्य मेडिकल कॉलेज

- उपमुख्यमंत्री बोले, शिक्षा मंथन का मिलेगा लाभ
- प्रदेश के सभी 75 जिलों में मेडिकल कॉलेज बनेंगे

कानपुर, प्रमुख संवाददाता। प्रदेश के उपमुख्यमंत्री व चिकित्सा शिक्षामंत्री बृजेश पाठक ने कहा कि केजीएमयू और एसजीपीजीआई लगातार एनआईआरएफ में स्थान पा रहे हैं। जल्द अन्य मेडिकल कॉलेज भी इस सूची में शामिल होंगे। अभी तक मेडिकल कॉलेजों को एनआईआरएफ में आवेदन करना नहीं आता है। शिक्षा मंथन के बाद कॉलेजों को लाभ मिलेगा।

सीएसजेएमयू में चल रहे शिक्षा मंथन के दूसरे दिन उद्घाटन सत्र में आए उपमुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के सभी 75 जिलों में मेडिकल कॉलेज बनेंगे। अभी 14 जिलों में मेडिकल कॉलेज नहीं है। इसमें दो जिलों में पीपी मॉडल के तहत एमओयू हो चुका है। 6 जिलों में पीपी और 6 जिलों में केंद्र सरकार की मदद से मेडिकल कॉलेज बनाएं जाएंगे। डिप्टी सीएम ने कहा कि अस्पतालों में दिक्कत न हो, इसके लिए डीएम व मुख्य चिकित्साधिकारी को स्थानीय स्तर पर खाली पदों पर भर्ती करने का अधिकार दिया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के 92 अस्पताल नेशनल रैंकिंग में स्थान प्राप्त कर रहे हैं।

डिप्टी सीएम बृजेश पाठक के साथ सवालों के जवाब देते मंत्री आशीष पटेल।

# विदेश के साथ एमओयू करने की पॉलिसी जरूरी

कानपुर। एआईसीटीई के चेयरमैन प्रो. सीताराम ने कहा कि काउंसिल की आइडिया लैब 24 घंटे काम करती है। आइडिया लैब सबसे लंबे समय तक चलने वाला प्रौद्योगिकी इंक्यूबेटर है। यहां से सैकड़ों कंपनियां निकलकर अपना व्यवसाय कर रही हैं। उन्होंने कहा कि विदेश के शैक्षिक संस्थानों से एमओयू के लिए पॉलिसी की जरूरत है। तकनीकी शिक्षा संस्थानों को एमओयू के लिए राज्य सरकार से अनुमति लेनी पड़ती है। उन्होंने ए-प्लसप्लस ग्रेड वाले विवि से खुद का ऑनलाइन प्रोग्राम शुरू करने की अपील की। आल इंडिया यूनिवर्सिटी का जनरल सेक्रेटरी डॉ. पंकज मित्तल व वाइस प्रेसिडेंट डॉ. विनय कुमार पाठक ने इंटरनेशनल समझौता बढ़ाने पर जोर दिया।

दैनिक जागरण कानपुर 10/07/2023

# भावी पीढ़ी के लिए लाना पड़ेगा बदलाव : राज्यपाल

## सीएसजेएमयू में आयोजित शिक्षा मंथन कार्यक्रम में बोलीं आनंदीबेन पटेल

जासं, कानपुर : राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कुलपतियों से कहा कि शिक्षा मंथन की रिपोर्ट मिलने के बाद अपने विश्वविद्यालय के अधिकारियों, कर्मचारियों और शिक्षकों के साथ ऐसा ही मंथन करें। रणनीति बनाएं और विश्व स्तरीय विश्वविद्यालय बनाने के लिए काम करें। एक कृषि विश्वविद्यालय के आर्गेनिक कारीडोर बेस्ट प्रैक्टिस का उल्लेख करते हुए बताया, कि इसे नैक के अधिकारियों ने भी सराहा है। इसी तरह सभी अपनी-अपनी बेस्ट प्रैक्टिस बुक बनाएं और सभी विश्वविद्यालयों को भेजें। बेस्ट प्रैक्टिस बुक बनाने का होमवर्क दो विश्वविद्यालयों को दिया था लेकिन अब तक उन्होंने पूरा नहीं किया।

राज्यपाल ने कहा, आज मैंने छोटी-छोटी बच्चियों को दो-दो बच्चों को उठाकर कसरत करते देखा, तो लगा कि सही समय पर मंथन का कार्यक्रम हो रहा है। इस मंथन से निकली योजनाओं का लाभ इन प्रतिभावान बच्चियों को मिलेगा। उन्होंने कहा कि जो आज पाठ्यक्रम है वह पांच साल बाद काम नहीं आने वाला है, क्योंकि सब कुछ बदल जाएगा। अगर हम नहीं बदलेंगे, हमारे शिक्षक नहीं बदलेंगे, हमारी प्रयोगशाला नहीं बदलेगी, हमारा प्रशिक्षण स्थल नहीं बदलेगा तो उसका फायदा आने वाली पीढ़ी को नहीं मिलेगा।

**पीएम ने जो एमओयू किए उनका करा रहे अध्ययन:** राज्यपाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इतने देशों में जाकर एमओयू करते हैं। जिससे देश व नई पीढ़ी को लाभ मिले। कोई एक पेटेंट भी नहीं देता है। प्रधानमंत्री ने विदेश में भरोसा बनाया है जिसकी वजह से दूसरे देश अपनी टेक्नोलाजी दे रहे हैं। मैंने दो कुलपतियों से प्रधानमंत्री के एमओयू का अध्ययन करने को कहा तो स्थानीय स्तर पर रोजगार दिलाने वाली तकनीक की अच्छी रिपोर्ट तैयार हुई है। पता चला कि कृषि के बजाय पशुधन का अर्थ व्यवस्था में दोगुणा योगदान है।

**आंगनवाड़ी केंद्रों में भी शुरू कराएं नई शिक्षा नीति:** राज्यपाल ने बताया कि राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति केजी से लेकर पीजी तक में लागू की गई है। आंगनबाड़ी केंद्रों में भी बच्चों के लिए नई शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षा व्यवस्था का प्रविधान किया गया है, लेकिन आंगनबाड़ी केंद्रों को अब तक यह नहीं मालूम कि उन्हें क्या करना है और क्या नहीं। आंगनबाड़ी केंद्र बेस्ट प्रैक्टिस के तहत बच्चों को ले जाकर कम से कम गमले में पौधारोपण तो कराएं। प्रधानमंत्री ने मुझे आंगनबाड़ी और विश्वविद्यालय के लिए काम करने का निर्देश दिया है।

**सफल आयोजन कि लिए कुलपति को दी बधाई:** कुलाधिपति ने शिक्षा मंथन के सफल आयोजन के लिए कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक को बधाई दी। उन्होंने आयोजन में सहायता करने वाले विश्वविद्यालय के 300 छात्र-छात्राओं की सराहना की और उनके साथ फोटो भी खिंचवाई।

सीएसजेएमयू के रानी लक्ष्मीबाई प्रेक्षागृह में आयोजित शिक्षा मंथन कार्यक्रम के समापन समारोह में प्रदेश के कुलपतियों के साथ पहली पंक्ति में राज्यपाल आनंदी बेन पटेल (बाएं से दूसरी), उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक (दाएं से दूसरे), प्राविधिक शिक्षा मंत्री आशीष पटेल (दाए) व उच्च शिक्षा राज्यमंत्री रजनी तिवारी (बाएं) ने सामूहिक फोटो खिंचवाई • जागरण

### अधिकारियों से कहा-गरीब बच्चों की राह में बाधा न बनें

राज्यपाल ने शिक्षा मंथन में नौकरशाही को आईना दिखाया। कहा कि मेरे पास कई अधिकारी आकर बताते हैं कि वह भी गरीबी से निकलकर आए हैं। मेरा कहना है कि अगर गरीबी से आए हो तो बहुत सारे गरीब परिवार के बच्चे पढ़कर आगे आना चाहते हैं। उनकी राह में बाधा मत बनो। वह देख रहे हैं कि उनकी समस्या का समाधान कौन नहीं कर रहा है। जिम्मेदारी को एक दूसरे पर थोपना ठीक नहीं है। सही समय पर निर्णय कीजिए।

## शिक्षकों के सामने चैट जीपीटी सबसे बड़ी चुनौती : प्रो. योगेश सिंह

- शिक्षा मंथन कार्यक्रम में बोले दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह
- वर्ष 2047 तक राष्ट्र को विकसित बनाने का लक्ष्य निर्धारित करने के लिए कहा

दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह • जागरण

जासं, कानपुर : शिक्षा मंथन कार्यक्रम के दूसरे दिन दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति योगेश सिंह ने कहा रोते हुए टीचर अच्छे नहीं लगते हैं। चैट जीपीटी से शिक्षकों के सामने चुनौती बढ़ गई है। समझ की समझ को विकसित करना ही शिक्षा है। सेमेस्टर परीक्षाओं के होने से शिक्षा में काफी बड़ा बदलाव हुआ है, जब भी कोई नया बदलाव किया जाता है तो लोगों को कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

प्रो. सिंह ने कहा कि जब कोई नई चीज लागू हो और उसे करना पड़े तो वह थोड़ा सा दुख देती है, लेकिन कुछ समय बाद जब हम उसे सीख लेते हैं तो उसी में हमें मजा आने लगता है। क्लासरूम पहले भी गड़बड़ थे। हमको इसमें ही बेहतर करके दिखाना होगा। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार एक डालर शिक्षा में निवेश करने से 20 डालर का ग्रोथ आता है। इस बात को ध्यान में रखकर प्रधानमंत्री के संकल्प के अनुसार 2047 तक राष्ट्र को विकसित देश बनाना है। उन्होंने कहा कि दुनिया यह मानती है कि भारतीय बच्चे अकेले अच्छा प्रदर्शन करते हैं लेकिन टीम वर्क में बेहतर नहीं दे पाते।

**कौशल विकास पाठ्यक्रमों में शिक्षकों की सर्वाधिक कमी:** राज्यपाल के विशेष कार्य अधिकारी डा. पंकज एल जानी ने रविवार को शिक्षा मंथन कार्यक्रम में नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में आ रही समस्याओं पर चर्चा के दौरान बताया कि राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति को पूरे देश में सबसे पहली बार लागू करने का परिणाम है कि प्रदेश में अगले साल स्नातक स्तर का पहला बैच निकलने वाला है। हालांकि कौशल विकास पाठ्यक्रमों में योग्य शिक्षकों की कमी सबसे ज्यादा अखर रही है।